International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 10 Ser. I ||October, 2021 || PP.80-81

स्वतन्त्र भारत की सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक स्थिति पर संगीत का प्रभाव

डॉ0 प्रभा वार्ष्णेय
एसोसिएट प्रोफेसर, (संगीत विभाग)
श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय,
अलीगढ

15 अगस्त सन् 1947 को परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़े भारत के स्वतंत्र होते ही सांस्कृतिक विकास की क्रान्ति सी प्रारम्भ हो गई। संगीत अभी तक अंग्रेजों के भाासन तथा भारतीय रियासतों के बन्धन में बँधा हुआ अपनी टूटती साँसों को लेकर नि चल और भाान्त पड़ा हुआ था। बन्धन मुक्त होते ही उसकी निश्प्राण काया में स्वच्छ और निर्मल भवांस का समावे ा होना प्रारम्भ हो गया तथा उसके स्थिर और अविचल स्वरूप पर कलात्मक हलचल की लहर दौड़ पड़ी।

''राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद अब भारत के मामले दूरगामी आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन कार्यान्वित करने का विकट कार्यभार था, ताकि दे ा की आर्थिक तथा सामाजिक संरचना का पुनर्गठन करना, आर्थिक और सांस्कृतिक पिछड़ेपन को दूर करना तथा उसके स्वतन्त्र–विकास के आधार के रूप में आधुनिक बहुविध अर्थ–व्यवस्था का निर्माण करना सम्भव हो सके।

स्वतन्त्र भारत की सरकार ने भारतीय कला और संस्कृति के विकास पर अपना महत्वपूर्ण ध्यान केन्द्रित किया। कला को प्रोत्साहित करके संगीतज्ञों एवं कलाकारों को भी प्रेरणा प्रदान की कि वे अपने प्रयास तथा लगन से भारतीय संगीत और कलाओं का मार्ग प्र ास्त करें। संगीत के महत्व को भली भांति समझ कर अनेकों प्र ांसनीय कदम राश्ट्रीय सरकार ने उठाये। सामान्य जनता, उच्च वर्ग तथा राश्ट्र, सभी यह समझ चुके थे कि दे ा का उन्नति के लिए अन्य वस्तुओं के साथ संगीत कला अत्यन्त आव यक है क्योंकि यह कलाओं में सर्वश्रेश्ठ है। सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक, इन तीनों ही प्रकार की स्थितियों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है।

सम्पूर्ण वि व को एक सूत्र में बाँधने की कला, संगीत के ही व ा में है। सन् 1952 में भारत सरकार ने संगीत कला को प्रोत्साहित करने के लिए राश्ट्रपति पदक प्रदान करना प्रारम्भ किया। सन् 1953 ई0 में संगीत नाटक अकादमी तथा सन् 1954 में ललित कला अकादमी' की स्थापना हुई। इसका परिणाम यह हुआ कि संगीतज्ञों तथा कलाकारों में संगीत के क्षेत्र में कुछ नया कर दिखाने की प्रेरणा जागृत होने लगी। भारतीय संगीत तो पूर्व से ही सर्वत्र सम्मान की दृश्टि से देखा जाता था, किन्तु मध्य में जो उसके विकास में बाधा पड़ी थी वह पुनः स्वतन्त्र भारत में नवीनता लिये हुए उज्ज्वल तथा विकसित मार्ग की ओर बढ़ चला। आज भारतीय संगीत के प्रति लोगों के हृदय में इतना सम्मान तथा उसको सुनने की इतनी उत्सुकता है कि हमें अपने संगीत पर गर्व होता है।

भारत सरकार के इस कदम से, सम्पूर्ण राश्ट्र, कलाओं की उन्नति तथा उनके विकास के लिए जागरूक हो इसी कार्य में जुट गया। भारत सरकार का ध्यान लोक–संगीत पर भी केन्द्रित हुआ। हमारी ग्रामीण सभ्यता तथा संस्कृति को भी सम्पूर्ण वि व समझे तथा जाने, इसकी आव यकता तथा महत्व को समझते हुए सरकार ने ग्रामीण कलाकारों को भी प्रोत्साहित करना प्रारम्भ किया। गणतन्त्र दिवस तथा अन्य वि ोश समारोहों पर आमन्त्रित करके इन्हें पुरस्कार प्रदान किये, जिससे इन कलाकारों का मनोवल बढ़ा तथा उनकी कलायें जो दबी हुईं थीं वे उभर कर सबके समक्ष उपस्थित हो गईं। सम्पूर्ण वि व, भारत में विभिन्न कलाओं को एक साथ देखकर तथा सुनकर अचम्भित हो उठा। आका ावाणी से भी इन ग्रामीणों का लोक संगीत प्रसारित होने लगा। भारतीय कलाकार, दे ा तथा विदे ाों में भी अपनी उत्कृश्ट संगीत कला का प्रद र्ान करके सभी के हृदयों पर राज करने लगे।

विभिन्न संगीत समारोहों के आयोजित होने से विदे ाी कलाकार भी अपनी–अपनी कला का प्रद र्ान करने के लिये भारत आने लगे जिससे भारत के सम्बन्ध विदे ाों से भी दिन प्रतिदिन बढ़ने लगे। इस प्रकार संगीत का मार्ग सम्पूर्ण रूप से प्र ास्त हो गया।

''भारत सरकार ने भी कलाकारों के प्रोत्साहन के लिए अच्छे कदम उठाये इसके परिणामस्वरूप विदे ाों के कलाकारों के सम्मिलित कार्यक्रम आयोजित होने लगे। भारतीय कलाकार अमेरिका, यूरोप तथा एि ाया के विविध दे ाों में सरकारी खर्च पर अपने कार्यक्रमों का प्रद र्ान करने जाने लगे और विदे ाों के कलाकार भी भारत में अपने–अपने दे ा की संगीत कला का प्रद र्ान करने आने लगे। ऐसे कार्यक्रमों से भारतीय संगीतज्ञों का विदे ाी संगीतज्ञों से सम्पर्क बढ़ा और संगीत की प्रगति हुई।

सन् 1965 ई0 से भारत में दूरद र्ान का प्रचार तथा प्रसार हुआ, इसके माध्यम से कलाकारों को अपनी कला दिखाने का तथा सुनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। भाास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम आका ावाणी तथा दूरद र्ान दोनों से प्रसारित होने लगे, जिससे आम जनता को भारतीय संगीत को जानने तथा समझने का मौका मिला। सम्पूर्ण ि ाक्षित वर्ग भी इसमें रूचि लेने लगा।

संगीत के पाठ्यक्रम में भाामिल होते ही एक नवीन क्रान्ति उत्पन्न हो गयी। छात्र तथा छात्रायें संगीत को विशय के रूप में अपनाकर उसमें गहरी रूचि लेने लगे। विभिन्न स्थानों पर संगीत विद्यालयों के खुलने से छोटे–छोटे बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी संगीत की ि ाक्षा ग्रहण करने लगे, इसका समाज पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा और माननीय विश्णु नारायण भातखण्डे जी का सपना जो कि भारतीय संगीत को उत्कृश्टता के ि ाखर पर देखने का था वह पूरा हुआ। उनका कथन है –

''मुझे यह सोचकर बड़ी प्रसन्नता होती है कि मैं अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए एक ढ़ाँचा तैयार कर सका, जिसे वे और अधिक उन्नत और पूर्ण बना सकेंगे। मैं आ ाा करता हूँ कि कुछ वर्शों के भीतर संगीत ि ाक्षा की एक सरल पद्धति होगी, जिससे अधिक से अधिक लोग लाभ उठा सकेंगे। भारत वर्श की महत्वाकांक्षा तब पूरी होगी जब भारतीय वि वविद्यालय के पाठ्यक्रम में संगीत को स्थान मिलेगा और सार्वजनिक रूप में संगीत ि ाक्षा की व्यवस्था होगी।'' निःसन्देह भातखण्डे जी का यह सपना आधुनिक स्वतन्त्र भारत में पूरा हो चुका है। संगीत की स्थिति में दिन–प्रतिदिन नवीन परिवर्तन तथा सुधार हो रहे हैं।

भारत की सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक स्थितियों पर भी संगीत का गहरा प्रभाव पड़ा है। उत्कृश्ट संगीत के कार्यक्रम प्रसारण होने से समाज का ढाँचा व्यवस्थित होता है। कलाओं के संरक्षण में पलने वाले चरित्र निर्मल तथा उज्ज्वल होते हैं। सांगीतिक वातावरण में ही एकता के पुश्प विकसित होते हैं क्योंकि संगीत ही हृदय में कोमल भावनाओं को जन्म देता है, जिससे मानव मानवीय भावनाओं को भली–भाँति समझने लगता है। यही एक ऐसी भाशा है जो सभी भाशाओं से ऊपर है।

विभिन्न प्रान्तों का संगीत आज एकजुट होकर भारतीय संगीत की आभा को द्विगुणित कर रहा है। आज की भारत सरकार इतनी जागरूक हो चुकी है कि सांस्कृतिक गतिविधियाँ निरन्तर तेजी से बढ़ती रहें इस पर पूरा ध्यान देती है। विभिन्न यूथ फेस्टिवल्स, जागरूकता दिवस आदि अनेक कार्यक्रम स्थान–स्थान पर आयोजित किये जाते हैं। सम्पूर्ण दे ा से आये हुए कलाकार अपनी–अपनी कला का प्रद र्ान करते हैं, जिससे उन्हें एक–दूसरे की सभ्यता तथा संस्कृति को पास से देखने एवं सुनने का अवसर प्राप्त होता है। अनेकों पुरस्कार तथा उपाधियों से अलंकृत होकर उनमें कुछ और करने की लालसा तथा प्रेरणा जागृत होती है। उभरती हुई प्रतिभायें सभी के समक्ष उभर कर आती हैं।

स्वतन्त्र भारत में हमारे सभी कलाकारों का यही प्रयन्त रहता है कि वे अधिक से अधिक भारतीय संगीत का नाम सर्वत्र रो ान करे। जब कभी भी वे अपनी कला का प्रद र्ान दे ा या विदे ा में करते हैं तो एक ही भावन उनके हृदय में रहती है कि हमारा भारतीय संगीत जो कि मध्य काल में तथा उसके बाद ब्रिटि ा साम्राज्य में कहीं खो गया था तथा उसकी लौ बुझ सी गयी थी, अब उसकी मर्यादा को कोई ठेस न

लगे इसलिए वे अच्छे से अच्छा प्रद ान करते हैं। यही कारण है कि भारतीय संगीत आज उस स्थान पर पहुँच चुका है जहाँ उसके सम्मान पर कोई प्रहार नहीं हो सकता तथा उसकी सुदृढ़ स्थिति पर कोई आँच नहीं आ सकती। विदे ाी भी हमारे संगीत के महान प्रसं ाक हो चुके हैं।

वर्तमान संगीत में नित नवीन खोज हो रही हैं, नये–नये राग तथा गायन भौलियों का निर्माण और नृत्यों में भी आधुनिकता का प्रादुर्भाव हो रहा है। विभिन्न नाट्य संस्थाओं द्वारा भी उत्कृश्ट संगीत से युक्त नाटकों का मंचन किया जाता है।

हमारे चित्रपट संगीत द्वारा भी संगीत का मार्गद ान होता है, इसीलिए इनका भी यह कर्तव्य हो जाता है कि यह समाज के समक्ष संगीत का उज्ज्वल रूप ही प्रद ित करें। किसी भी तरह की अ ालीलता समाज का चारित्रिक पतन कर सकती है। समाज के नैतिक मार्यादा से हटते ही सम्पूर्ण सामाजिक ढ़ाँचा अव्यवस्थित हो सकता है क्योंकि संगीत और साहित्य दोनों ही दे ा के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। हम सभी को संगीत के व्यवस्थित निर्माण करने में सहयोग करना चाहिए, यही हमारा महान कर्तव्य होगा।

संदर्भ –

1. भारतीय संगीत (द्वितीय भाग) – राम अवतार वीर
2. भारतीय संगीत का इतिहास – भगवत भारण भार्मा
3. भारतीय संगीत का इतिहास – डॉ0 अ ाोक कुमार 'यमन'
4. भारतीय संगीत का ऐतिहासिक वि ालेशण – स्वतन्त्र भार्मा
5. भारतीय संगीत का इतिहास – उमे ा जो ाी
6. उत्तर भारतीय संगीत का इतिहास – भातखण्डे